Dr. Raman Kumar Thakur
Assistant professor (Guest)
Department of Economics,
D.B.College Jaynagar, Madhubani.
L.N.M.U.Darbhanga.

Class:-B.A.part:-2(HONS)
DATE:-10 May 2020

" तृतीय पंचवर्षीय योजना"

(1 अप्रैल, 1961 से 31 मार्च 1966 तक)

→यह योजना 1 अप्रैल 1961 को प्रारंभ होकर 31 मार्च 1966 को समाप्त हुए इस योजना में अर्थव्यवस्था को आर्थिक गतिशीलता की अवस्था तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया था इस योजना के मुख्य उद्देश्य निंलिखित थे जो इस प्रकार से देखा जा सकता है:-

1) राष्ट्रीय आय में 5 से अधिक वार्षिक वृद्धि प्राप्त करना तथा 5 वर्षों मैं 30 % वृद्धि करना इसी प्रकार प्रति व्यक्ति आय में इसी अवधि में 17% वृद्धि करना|

2) खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना तथा उद्योग एवं निर्यात की आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए कृषि उत्पादन को बढ़ाना।

3) आधारभूत उद्योगों जैसे इस्पात रसायनिक उद्योग ,ईंधन व शक्ति का विस्तार करना तथा मशीन निर्माण क्षमता स्थापित करना,जिससे आगामी लगभग 10 वर्षों में देश के स्वयं के साधनों से औद्योगिकरण की आवश्यकताएं पूरी की जा सके।

4) देश की श्रम शक्ति का अधिकतम उपयोग करना तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना।

5) अवसर की समानता को अधिकाधिक बढ़ाना व धन के वितरण की असमानता को कम करना एवं आर्थिक शक्ति का समान वितरण करना

तीसरी योजना के अंतर्गत खाद उत्पादन में 6% वार्षिक वृद्धि तथा औद्योगिक उत्पादन में 14 %वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य निर्धारित किया था, किंतु योजना अवधि में खाद्यान्न उत्पादन में केवल 2% वार्षिक वृद्धि ही हो सकी । योजना के 5 वर्षों में राष्ट्रीय आय की वृद्धि 5.0 % प्रतिवर्ष लक्ष्य की तुलना में 1993- 94 की कीमतों पर 2.5 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर प्राप्त की गई । तथा प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय में वार्षिक वृद्धि दर 0.2 %की ही रही । इस योजना की सफलता का मुख्य कारण 1962 में चीन के साथ तथा 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध छिड़ना था। 1965- 66 में देश में सूखा पड़ा । अत: 1965- 66 में तो राष्ट्रीय

आय में वृद्धि की अपेक्षा वस्तुतः 4.7 %की कमी हुई ।तृतीय योजना के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र में परिव्यय की प्रस्तावित राशि 7500 करोड़ रुपए थी ,जबकि वास्तविक व्यय 8577 करोड़ रुपए था।

" तीन वार्षिक योजनाएं "
(1966-67 से1968-69)

→ तृतीय पंचवर्षीय योजना 31 मार्च 1966 को समाप्त हो गई थी। तदनुसार चतुर्थ योजना को 1 अप्रैल 1966 से प्रारंभ होना चाहिए था, किंतु तृतीय योजना की दुर्भाग्यपूर्ण असफलता के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन लगभग स्थिर सा हो गया था .जून 1966 में भारत सरकार द्वारा भारतीय रुपए के अवमूल्ययन (Devaluation) की घोषणा की गई. ताकि देश के निर्यातो में वृद्धि की जा सके। किंतु इसके अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं हो सके. और चौथी योजना को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया तथा उसके स्थान पर तीन वार्षिक योजनाएं लागू की गई कुछ अर्थशास्त्रियों ने तो 1966 से 1969 तक की अवधि को योजनाओं अवकाश की संज्ञा तक दे दी, क्योंकि इस अवधि में कोई नियमित नियोजन नहीं किया गया.